राम जानकीजी देवता और अन्य

बनाम

बिहार राज्य और अन्य

11 मई, 1999

[जगन्नाथ राव और उमेश सी. बनर्जी, जे. जे.]

हिंदू विधिः

1. भूमि के क्षेत्र के साथ स्थित अलग- अलग मंदिर और शबेट के माध्यम से कब्जे में रखे गए- भूमि सीमा- दो अलग- अलग इकाइयों के लिए दावा- अधिकार- आयोजित, दोनों देवता अलग- अलग न्यायिक हैं जो व्यक्तिगत अनुदान बिहार भूमि सुधार (सीमा क्षेत्र का निर्धारण और अधिशेष भूमि का अधिग्रहण) अधिनियम, 1961 के हकदार हैं।

2. मूर्तियाँ और देवता- स्वयंभू या स्व- अस्तित्व और प्रतिष्ठान या स्थापित की छवियाँ- हिंदू विधि में मौजूद नकली देवता की कोई अवधारणा नहीं है कि भगवान निराकार और आकारहीन हैं, इसकी उपस्थिति एक कारण से महसूस नहीं की जाती है।

3. विशेष रूप या छवि, लेकिन हिंदू मूर्ति को एक न्यायिक विषय के रूप में मान्यता देने वाले सर्वशक्तिमान हिंदू कानून की

उपस्थिति के कारण, जो कानूनी रूप से एक प्राकृतिक व्यक्ति की तरह संपत्ति रखने में सक्षम है- यह एक विशेष छवि नहीं है जो एक न्यायिक व्यक्ति है, बल्कि यह मन का एक विशेष झुकाव है जो छवि को पवित्र करता है।

4. न्यायिक स्वामित्वः- जब डिवीजन बेंच का एक मौजूदा आदेश था, तो मामले से निपटने वाले एकल न्यायाधीश को उसी का उल्लेख करना चाहिए था, विशेष रूप से जब एक विपरीत दृष्टिकोण व्यक्त किया जा रहा है- यह न्यायिक प्रभावकारिता और औचित्य का मामला है, हालांकि कानून अभ्यास और प्रक्रिया की अनिवार्य आवश्यकता नहीं है।

5. एक महंथ ने समर्पण के दो अलग- अलग कार्यों को निष्पादित किया और इस तरह दो देवताओं राम जानकीजी और ठाकुर राजा को भूमि संपत्तियों को समर्पित किया। 81.14 एकड़ भूमि और शेबैट्स के माध्यम से कब्जे में रखा गया था। दोनों देवता भूमि के क्षेत्र में स्थित दो अलग- अलग मंदिरों में स्थित थे। महंथ की मृत्यु के बाद, याचिकाकर्ता संख्या 3 दोनों देवताओं का आश्रय बन गया। देवताओं की संपत्तियों को भी विधिवत पंजीकृत किया गया था और धार्मिक न्यास बोर्ड के साथ सूचीबद्ध किया गया था और इसके नियंत्रण में थे और मार्गदर्शन करें।

6. जाँच रिपोर्ट के आधार पर, मामले में डिप्टी कलेक्टर क्षेत्राधिकार निर्धारण के लिए, देवताओं को दो इकाइयों की अनुमति दी गई और बिहार भूमि के तहत राज्य को केवल पांच एकड़ अतिरिक्त भूमि निहित करने की घोषणा की गई सुधार (अधिकतम सीमा क्षेत्र का निर्धारण और अधिशेष भूमि का अधिग्रहण) अधिनियम 1961। हालांकि, जिले के कलेक्टर ने माना कि न्यास की पात्रता केवल एक इकाई होगी। इसके बाद की पुनरीक्षण याचिका को इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि यह सीमा कानूनों द्वारा निराशाजनक रूप से वर्जित है।

7. सदस्य, राजस्व बोर्ड के आदेश के खिलाफ, जिसमें दो अलग- अलग देवताओं के लिए दो इकाइयों को रखने के अपीलकर्ताओं के अधिकारों और दलीलों को खारिज कर दिया गया था, अपीलार्थी ने एक रिट याचिका के माध्यम से उच्च न्यायालय का रुख किया। उच्च न्यायालय ने दो इकाइयों को राहत देते हुए उक्त याचिका को स्वीकार कर लिया याचिकाकर्ता द्वारा दावा किया गया। उच्च न्यायालय का निर्णय अंतिम हो गया और पक्षकारों के बीच बाध्यकारी हो गया क्योंकि वहाँ से कोई अपील नहीं थी। इसके बाद, लगभग दो साल बाद, इसके समक्ष एक रिट याचिका दायर की गई।

8. बाद में, लगभग दो वर्ष् बाद याचिकाकर्ता के पक्ष में एक अनिवार्य आदेश जारी करने के लिए संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत इस न्यायालय के समक्ष एक याचिका दायर की गई।

9. हालाँकि, इस मामले को उच्च न्यायालय को इस निर्देश के साथ भेजा गया था कि उक्त याचिका को समीक्षा याचिका के रूप में माना जाए।

10. इस न्यायालय के निर्देश के संदर्भ में, उच्च न्यायालय की खंड पीठ के समक्ष पुनरीक्षण याचिका दायर की गई थी। उक्त याचिका को उच्च न्यायालय द्वारा अनुमति दी गई थी और पहले वापस ले लिया गया था। हालाँकि, मामले को उपयुक्त पीठ के समक्ष सूचीबद्ध करने का निर्देश दिया गया था, लेकिन इसे मामले में नहीं रखा गया था। दो साल से अधिक सुनवाई के बाद अंत में मामला एकल न्यायाधीश के समक्ष सुनवाई के लिए आया, जिन्होंने याचिकाकर्ता के तर्क को खारिज कर दिया।

11. अपीलार्थियों की ओर से, यह तर्क दिया गया कि एक खंड पीठ का निर्णय था जिसमें अपीलार्थियों की पात्रता दर्ज की गई थी छूट और न्यायिक औचित्य के लिए एक एकल न्यायाधीश को उसी उच्च न्यायालय से पहले के खंड पीठ के फैसले की एक बाध्यकारी मिसाल का पालन करने की आवश्यकता थी और इसी मामले में यह

मुद्दा अब समग्र नहीं था और आगे की चर्चा के लिए खुला था, लेकिन एकल न्यायाधीश ने मूर्तियों के संबंध में पहले के निष्कर्ष के बावजूद एक बार फिर इस मुद्दे का फैसला किया। अपील को न्यायालय द्वारा अनुमति दी गयी।

12. दो मूर्तियों के तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है और इस तरह दूसरी मूर्ति को दूसरी इकाई से वंचित करने का सवाल नहीं उठता है और न ही उठ सकता है। यदि दो मूर्तियाँ हैं जो न्यायिक व्यक्तित्व के लिए जिम्मेदार होने में सक्षम हैं, तो एक अपीलार्थी संख्या के बजाय दो इकाइयाँ दी जानी चाहिए। 1 और 2, इस प्रकार, व्यक्तिगत अनुदान के हकदार हैं। [456- बी- डी]

13. श्री लक्ष्मी नारायण और अन्य बनाम वी. बिहार राज्य और अन्य (1978) बीबीसीजे 489, संदर्भित किया गया।

14. हिंदू कानून हिंदू मूर्ति को एक न्यायिक विषय के रूप में मान्यता देता है एक प्राकृतिक व्यक्ति के समान कानूनी व्यक्ति की स्थिति का पालन करते हुए हिंदू शास्त्रों के कारण संपत्ति रखने में सक्षम है।

15. दो मंदिर हैं- एक में 'जानकीजी' है और दूसरे में 'राजा रानी' है, लेकिन कल्पना के किसी भी विस्तार से, देवता को नकली रूप में कहा जा सकता है और नकली रूप की शुरुआत की यह

अवधारणा, ऐसा प्रतीत होता है कि हिंदू कानून ग्रंथों के प्रावधानों का गलत अध्ययन है। मानव प्रतिष्ठापन की आवश्यकता होती है और प्रतिष्ठापन के अनुष्ठानों के पूरा होने की स्थिति में, दिव्यता का अनुमान लगाया जाता है। [449- ए- बी; 454- डी- ई]

16. प्रमथा नाथ मलिक बनाम प्रद्युम्न कुमार मलिक और अन्य एलआर 521 ए 245, संदर्भित।

17. हिंदू अधिकारियों के अनुसार, छवियाँ दो प्रकार की होती हैं- पहली इसे स्याम्भू या आत्म- अस्तित्व या आत्म- प्रकट के रूप में जाना जाता है, जबकि दूसरा प्रतिष्ठिता या स्थापित है। स्याम्भू या स्वयं प्रकट छवि प्रकृति का एक उत्पाद है और यह अनादी या बिना किसी शुरुआत के है और उपासक बस इसके अस्तित्व की खोज करते हैं और ऐसी छवियों को अभिषेक या प्रतिष्ठान की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन मानव निर्मित छवि को अभिषेक की आवश्यकता होती है।

18. इस मानव निर्मित छवि को दीवार या कैनवास पर चित्रित किया जा सकता है। जबकि आमतौर पर एक मूर्ति को मंदिर में पवित्र किया जाता है, यह एक आवश्यक शर्त प्रतीत नहीं होती है। यदि लोग मंदिरों की धार्मिक प्रभावशीलता में विश्वास करते हैं तो अन्य क्षेत्रों के संबंध में कोई अन्य आवश्यकता मौजूद नहीं है।

हिंदुओं के शास्त्रों में "अग्नि" "देवता;" वायु "देवता हैं- ये देवता आकारहीन और निराकार हैं लेकिन" हर अनुष्ठान के लिए "हिंदू" अपनी आहुति देते हैं।

19. देवता को दी जाने वाली आहुति ही सर्वोतम है। यह कोई विशेष छवि नहीं है जो एक न्यायिक व्यक्ति है, बल्कि यह मन का एक विशेष झुकाव है जो छवि को पवित्र करें।

20. अडंगी नागेश्वर राव बनाम। श्री अंकम्मा देवता मंदिर, (1973) ए. डब्ल्यू. आर. 379 ने पुष्टि की।

21. भूपतिनाथ बनाम रामलाल मैत्र, आई. एल. आर. (37) कलकत्ता 128, संदर्भित।

बी. के. मुखर्जी- हिंदू लॉ ऑफ रिलीजियस एंड चैरिटेबल ट्रस्टः 5 टी. एडन संदर्भित किया गया।

22. ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ हैं और उसकी उपस्थिति सर्वशक्तिमान की है यह निराकार है और यह उपासको के लाभ के लिए है कि सर्वोच्च सता की छवियो में अभिव्यक्ति होती है। यह रूपहीन है, आकारहीन है और यह लोगों के लाभ के लिए है।

23. उपासक की परम सत्ता की छवियों में अभिव्यक्ति है। परम सत्ता का कोई गुण नहीं है, जिसमें शुद्ध आत्मा होती है और जो बिना किसी दूसरे अस्तित्व के होती है, अर्थात वास्तव में एकमात्र

ईश्वर ही अस्तित्व में हैं, उनके अलावा वास्तविक अस्तित्व में कोई अन्य अस्तित्व नहीं है।

24. दो अवधारणाएँ हैं: सबसे पहले, जो संपत्ति देवता को समर्पित होती है, वह मूर्ति के रूप में देवता में ही एक न्यायिक व्यक्ति के रूप में निहित होती है और दूसरे स्थान पर, मूर्ति के व्यक्तित्व को शेबेट के प्राकृतिक व्यक्तित्व से जोड़ा जाता है, प्रबंधक होने या धर्म कर्ता होने के नाते और जिसे देवता को समर्पित किया जाता है। मूर्ति की अभिरक्षा और जो मूर्ति की संपत्ति के संरक्षण के लिए अन्यथा जिम्मेदार है।

गोलाप चंद्र सरकार, शास्त्री का हिंदू कानूनः 8 टी. एड्। , संदर्भित किया गया।

25. जब डिवीजन बेंच का एक मौजूदा आदेश था, न्यायिक औचित्य की मांग है कि मामले से निपटने वाले एकल न्यायाधीश को उसी का उल्लेख करना चाहिए था, विशेष रूप से तब जब एकल न्यायाधीश द्वारा एक विपरीत विचार व्यक्त किया जा रहा हो। यह न्यायिक प्रभावकारिता और औचित्य का मामला है, हालांकि यह कानून की अनिवार्य आवश्यकता नहीं है।

26. अदालत को इस मुद्दे पर निर्णय लेते समय अभिलेखों पर गौर करना चाहिए कि किस उद्देश्य के लिए मामला अदालत के

समक्ष रखा गया है। न्यायिक अनुशासन को एकल न्यायाधीश को जैसा की निर्णय किया गया है उस तरीके से मामले का निपटारा नहीं करने के लिए राजी करना चाहिए था, क्योंकि पहले के आदेश का भी कोई संदर्भ नहीं है।

F- सिविल अपीलीय न्यायनिर्णयः 1992 की सिविल अपील सं. 107 पटना उच्च न्यायालय के दिनांकित 23.5.91 के निर्णय और आदेश से 1984 का सी. डब्ल्यू. सं. 5020।

G- डी. अपीलार्थियों के लिए गोवर्धन। प्रतिवादी के लिए बी. बी. सिंह जितेंद्र शर्मा, (सुश्री जे. अहमद) पी. गौर के लिए, प्रतिवादी संख्या के लिए।

27. बनर्जी, जे. मुख्य प्रश्न जो इस में विचार के लिए आता है वह यह है कि विशेष अनुमति प्रदान करके, अपील यह है कि क्या किसी देवता को एक दृश्य छवि वाले उचित समारोहों के प्रदर्शन द्वारा पवित्र किया जा रहा है और उसके निवास में रहने को बिहार भूमि सुधार (अधिकतम सीमा क्षेत्र का निर्धारण और अधिशेष भूमि का अधिग्रहण) अधिनियम, 1961 (1962 का बिहार अधिनियम XII) के उद्देश्य के लिए एक न्यायिक व्यक्ति के रूप में माना जाना है।

28. तथ्यात्मक पृष्ठभूमि के संदर्भ में, अभिलेख दर्शाते हैं कि महंथ सुखराम दास ने दिसंबर, 1950 में समर्पण के दो अलग-

अलग कार्यों को निष्पादित किया और भारतीय पंजीकरण अधिनियम के तहत विधिवत पंजीकृत किया।

29. उसमें भूसम्पत्तियों को देवताओं 'राम जानकी जी' (अपीलार्थी संख्या 1) और ठाकुर राजा (उच्च न्यायालय के अभिलेखों में गलत तरीके से वर्णित) को समर्पित करना। 'राजा रानी' के रूप में) (अपीलार्थी संख्या 2)। दोनों देवताओं को अलग- अलग 81.14 एकड़ भूमि की भूमि दी गई थी और वास्तव में शेबैट के माध्यम से कब्जा कर लिया गया था। हालाँकि, उपरोक्त महांत सुखराम दास की मृत्यु के बाद, याचिकाकर्ता संख्या 3 दोनों देवताओं का संरक्षक बन गया।

30. देवताओं की संपत्तियों को भी विधिवत पंजीकृत किया गया था और धार्मिक न्यास बोर्ड के साथ सूचीबद्ध किया गया था और वे बोर्ड के नियंत्रण और मार्गदर्शन में हैं यह ध्यान दिया जाए कि 'राम जानकी जी' और 'राजा रानी' दोनों (सुविधा के लिए) क्योंकि उच्च न्यायालय ने ठाकुर राजा के स्थान और स्थान पर देवता का उल्लेख किया है) भूमि के क्षेत्र के भीतर स्थित दो अलग- अलग मंदिरों में स्थित हैं।

31. जाँच रिपोर्ट के आधार पर, मामले में डिप्टी कलेक्टर अधिकतम सीमा मामले में 18 नवंबर, 1976 के अपने आदेश द्वारा

अधिकतम सीमा क्षेत्र के निर्धारण ने देवताओं को दो इकाइयों की अनुमति दी, इस आधार पर कि दो मंदिर हैं जिन्हें समर्पण नामों के अलग- अलग पंजीकृत विलेखों के माध्यम से भूमि उपहार में दी गई थी और केवल 5 एकड़ अतिरिक्त भूमि को राज्य को निहित करने के लिए घोषित किया गया था।

32. हालांकि, जिले के कलेक्टर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि केवल दो मंदिरों के अस्तित्व को अधिनियम के तहत दो अलग-अलग इकाइयों के अधिकार का आधार नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि दोनों इकाइयों को दान की गई पूरी संपत्ति का प्रबंधन धार्मिक न्यास बोर्ड के निर्देश पर गठित एक समिति द्वारा किया जा रहा है और केवल एक व्यक्ति को प्रबंधकीय अधिकार का पूर्व प्रदान किया जा रहा है और यह दिखाने के लिए रिकॉर्ड पर कोई सबूत नहीं है कि देवताओं को दान की गई संपत्ति का अलग से प्रबंधन किया जाना है, जिसका अलग खाता है धारा 5 के तहत छूट और दो इकाइयों की पात्रता के लिए सिफारिश उत्पन्न नहीं होगी। वास्तव में कलेक्टर ने आर. जे. डी. ई. आई. टी. आई. ई. एस. बनाम को दर्ज करते हुए एक आदेश पारित किया।

33. इसमें कहा गया है कि न्यास की पात्रता केवल एक इकाई होगी। हालाँकि, उसके बाद की पुनरीक्षण याचिका को इस आधार पर

खारिज कर दिया गया था कि वह सीमितता के कानूनों द्वारा निराशाजनक रूप से बाधित थी अभिलेख दर्शाते हैं कि सदस्य बोर्ड के आदेश के विरुद्ध राजस्व, जिसमें दो अलग- अलग देवताओं के लिए दो इकाइयों को रखने के याचिकाकर्ताओं के अधिकारों और दलीलों को खारिज कर दिया गया था, याचिकाकर्ता ने कलेक्टर और राजस्व बोर्ड के सदस्य द्वारा पारित आदेशों को रद्द करने के लिए 1984 की रिट याचिका 5020 में पटना उच्च न्यायालय का रुख किया।

34. अभिलेख आगे दर्शाता है कि उच्च न्यायालय ने 19 नवंबर 1984 को रिट याचिका की अनुमति दी और याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावे के अनुसार दो इकाइयों को राहत प्रदान की। उच्च न्यायालय का निर्णय इस तथ्य के कारण पक्षकारों के बीच अंतिम और बाध्यकारी हो गया कि उससे कोई अपील नहीं की गई थी। लेकिन इसके बाद लगभग दो साल बाद एक रिट याचिका दायर की गई।

35. संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत इस न्यायालय के समक्ष 1985 का सिविल रिट संख्या 52563 (बद्रा महतो बनाम बिहार राज्य) जिसमें एक बद्र महतो ने याचिकाकर्ता (उपरोक्त बद्र महतो) के पक्ष में आवंटन आदेश के संबंध में एक अनिवार्य आदेश

जारी करने का अनुरोध किया। हालाँकि, इस न्यायालय ने इस मामले को इस निर्देश के साथ उच्च न्यायालय को भेज दिया कि इस न्यायालय के समक्ष याचिका को उच्च न्यायालय के समक्ष समीक्षा याचिका के रूप में माना जाए और तदनुसार इसका निपटारा किया जाए।

36. 21 अक्टूबर, 1987 को इस न्यायालय के निर्देश के संदर्भ में डिवीजन उच्च न्यायालय की पीठ ने निर्देश दिया कि मामले को 23 नवंबर 1987 को डिवीजन बेंच के समक्ष रखा जाना चाहिए, बशर्ते कि किसी भी हिस्से की सुनवाई हो और 25 नवंबर, 1987 को जैसा कि कालक्रम दर्शाता है कि समीक्षा याचिका की अनुमति दी गई थी और 19 नवंबर, 1984 के आदेश को वापस ले लिया गया था। बात यह है हालाँकि, 4 दिसंबर, 1987 को उपयुक्त पीठ के समक्ष सूचीबद्ध होने का निर्देश दिया गया था। हालाँकि इस मामले को सूची में नहीं रखा गया था या दो साल से अधिक समय तक सुनवाई नहीं हुई थी और अंत में यह मामला विद्वान एकल न्यायाधीश के समक्ष सुनवाई के लिए आया, जिन्होंने बदले में याचिकाकर्ता के तर्क को खारिज कर दिया है और इसलिए इस न्यायालय के समक्ष अपील की गई है।

37. मामले को आगे बढ़ाने से पहले, यह सुविधाजनक होगा यह ध्यान देने के लिए कि आदेश की समीक्षा करते समय, उच्च न्यायालय की खंड पीठ न्यायालय को 19 नवंबर, 1984 के अपने पहले के आदेश को याद करते हुए खुशी हो रही है, लेकिन दो मूर्तियों के अधिकार से संबंधित टिप्पणियां उचित प्रतीत होती हैं। उच्च न्यायालय ने 19 नवंबर, 1984 के अपने आदेश में कहा।

38. श्री लक्ष्मी नारायण और अन्य के मामले में न्यायालय बनाम बिहार राज्य अलग- अलग देवताओं के नाम पर अलग है। दान के तहत स्वामित्व मूर्तियों में निहित है; मामला होगा अलग था अगर दान किसी भी मठ के लिए था जिसमें थे दो देवता।

39. कलेक्टर के आदेश से ही ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों दान दो देवताओं के नाम से किए गए थे जिनकी ओर से दावे किए गए हैं। यह कई लोगों द्वारा बसाया जाता है। न्यायिक समिति की घोषणाएँ जो हिंदू कानून के तहत देवताओं की छवियाँ प्राप्त करने की क्षमता वाली न्यायिक संस्थाएं हैं। उपहार और धारण संपत्ति जैसे, जब उपहार सीधे किसी मूर्ति को दिया जाता है, प्रत्येक मूर्ति या देवता द्वारा प्रबंधित किए जाने का अपना अधिकार रखता है अलग- अलग प्रबंधक या एक सामान्य प्रबंधक द्वारा।

40. श्री गोबर्धन ने तर्क दिया कि इसमें छूट और न्यायिक औचित्य के लिए अपीलार्थियों की पात्रता को दर्ज करने वाला एक खंड पीठ का निर्णय है, जिसमें एक विद्वान एकल न्यायाधीश को उसी उच्च न्यायालय से पहले के खंड पीठ के फैसले की एक बाध्यकारी मिसाल का पालन करने की आवश्यकता होती है और इसी मामले में। श्री गोबर्धन के अनुसार वास्तव में यह मुद्दा अब एकीकृत नहीं था और आगे की चर्चा के लिए खुला था, लेकिन विद्वान एकल न्यायाधीश ने एक बार फिर इस मुद्दे पर फैसला किया।

41. हम यह दर्ज करने के लिए आबद्घ हैं कि हम इस तरह की आलोचना के लिए कुछ औचित्य पाते हैं। यह सच है कि पूर्ववर्ती खंड पीठ के आदेश को वापस ले लिया गया है और कड़ाई से कहें तो इसे संदर्भित करने की कोई आवश्यकता नहीं हो सकती है, लेकिन जब खंड पीठ का कोई मौजूदा आदेश था, तो न्यायिक औचित्य मांग करता है कि मामले से निपटने वाले विद्वान एकल न्यायाधीश को उसी का उल्लेख करना चाहिए था, विशेष रूप से जब विद्वान न्यायाधीश द्वारा एक विपरीत विचार व्यक्त किया जा रहा हो।

42. यह न्यायिक प्रभावकारिता और औचित्य का मामला है, हालांकि यह कानून की अनिवार्य आवश्यकता नहीं है। अदालत को इस मुद्दे पर निर्णय लेते समय अभिलेखों पर गौर करना चाहिए कि

किस उद्देश्य के लिए मामला अदालत के समक्ष रखा गया है बल्कि हम यहाँ यह दर्ज करने के लिए व्यथित हैं कि न्यायिक अनुशासन को विद्वान एकल न्यायाधीश को उस तरीके से मामले का निपटारा नहीं करने के लिए राजी करना चाहिए था जैसा कि किया गया है, क्योंकि पहले के आदेश का भी कोई संदर्भ नहीं है।

43. मामले पर आगे बढ़ने से पहले निर्णय को आगे बढ़ाया जाता है हालाँकि, यह ध्यान रखना सुविधाजनक होगा कि हिंदू कानून हिंदू मूर्ति को एक न्यायिक विषय के रूप में धारण करने के लिए कानून में सक्षम है कानूनी स्थिति का पालन करते हुए हिंदू शास्त्रों के कारण एक प्राकृतिक व्यक्ति की तरह ही में प्रिवी काउंसिल एफ प्रमथा नाथ मलिक बनाम प्रद्युम्न कुमार मलिक और अन्य एल. आर. 245 ने देखाः

" इस बिंदु पर उभरने वाले प्रश्नों में से एक इस तरह की प्रकृति के बारे में है। एक मूर्ति, और उसके कारण की जाने वाली सेवाएं। हिंदू मूर्ति के अनुसार लंबे समय से स्थापित प्राधिकरण, के धार्मिक रीति- रिवाजों पर आधारित हिंदू, और कानून के न्यायालयों द्वारा इसकी मान्यता, एक "न्यायिक" इकाई "। मुकदमा करने और होने की शक्ति के साथ इसका न्यायिक दर्जा है। अपने प्रभार में और जो

कानून में सभी शक्तियों के साथ इसके प्रबंधक हैं ऐसी परिस्थितियों में, सादृश्य पर, प्रबंधक को दिया जाएगा एक शिशु उत्तराधिकारी की संपत्ति। अधिकारियों को उद्धृत करना अनावश्यक है; इस सिद्धांत के लिए, इस प्रकार सरलता से कहा गया है, दृढ़ता से स्थापित है। "

44. स्थिति की ठोस वास्तविकताओं का एक उपयोगी विवरण होना चाहिए। रामब्रह्मा चटर्जी बनाम में जे. मुखर्जी के निर्णय में पाया गया। केदार नाथ बनर्जी, (1922) 36 सीएलजे 478/483, "हमें वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है। यहाँ विस्तार से एक पवित्र की निरंतर पूजा के सामान्य प्रकार छवि- मंदिर की सफाई, धब्बा लगाने की प्रक्रिया, पिछले दिन के फूलों के प्रसाद को हटाना, प्रस्तुति ताजे फूलों की, फूलों और पानी के साथ चावल की सम्मानजनक भेंट, और इसी तरह की अन्य प्रथाएँ। यह कहने के लिए पर्याप्त है कि देवता है संक्षिप्त, एक जीवित प्राणी के रूप में कल्पना की जाती है और उसी तरह से व्यवहार किया जाता है जैसे घर के मालिक का इलाज उसके विनम्र सेवक द्वारा किया जाता था। जीवन की दैनिक दिनचर्या सूक्ष्म सटीकता के साथ गुजरती है; जीवंत जीवन की आवश्यकताओं और विलासिता के साथ छवि को उचित माना जाता है। उत्तराधिकार, यहाँ तक कि कपड़े बदलने, पके हुए कपड़े चढ़ाने

तक और बिना पका हुआ भोजन, और आराम करने के लिए सेवानिवृत्ति।

45. एक देवता की स्थापना करने वाला और इनके लिए जिम्मेदार बनने वाला व्यक्ति कर्तव्य वास्तविक रूप से होते हैं और आम बोलचाल में इन्हें शेबेट कहा जाता है। यह जिम्मेदारी, निश्चित रूप से, एक पवित्र हिंदू द्वारा रखी जाती है, या तो धार्मिक संस्कारों का व्यक्तिगत प्रदर्शन या- जैसा कि मामले में शूद्र, किस जाति के दलों के रोजगार से संबंधित थे एक ब्राह्मण पुजारी अपनी ओर से ऐसा करने के लिए या संस्थापक, किसी भी समय उनकी मृत्यु से पहले, या उनके उत्तराधिकारी इसी तरह, 450 का पद प्रदान कर सकते हैं, दूसरे पर शेबेट "।

46. एकमात्र सवाल जो विचार के लिए आता है वह यह है कि क्या 'राम जानकी जी' और 'राजा रानी' को हिंदू देवता और अलग न्यायिक निकाय कहा जा सकता है और इस आधार पर अपील के तहत फैसले में विद्वान न्यायाधीश हैं। देवता की छवि शास्त्रों में पाई जाती है। राजा रानी 'है। शास्त्रों को नहीं पता। यह हिंदू पैंथियन में अज्ञात है। यह एक विशेष छवि जो एक न्यायिक व्यक्ति है। मूर्ति फिर से एक छवि है देवता। किसी भी नाम या छवि के प्रति समर्पण नहीं हो सकता है। शास्त्रों द्वारा मान्यता प्राप्त।

47. यहाँ, वर्तमान मामले में, याचिकाकर्ताओं दावा करें कि समर्पण दोनों देवताओं 'राजा रानी' के लिए है लेकिन कोई नहीं इनमें से कुछ शास्त्रों द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। याचिकाकर्ताओं ने तर्क दिया कि राजा रानी हिंदू देवताओं के तहत देवता हैं। उपनिषदों को हिंदुओं का सर्वोच्च पवित्र ग्रंथ माना जाता है। यह स्वीकार किया गया कि कौशितकी- ब्राह्मण- उपनिषद में द्वितीय अध्याय 'श्लोक 1' का हिंदी में अनुवाद पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, '108 उपनिषदों' के रूप में शैलीबद्ध पुस्तक में निम्नलिखित कहा गया हैः-

> **" यह ऋषि कौशिताकी का कथन है कि आत्मा ईश्वर और आत्मा है। भगवान को एक राजा के रूप में माना जाता है और ध्वनि उनकी रानी है। उपरोक्त अनुवाद को गंभीर रूप से चुनौती दी गई है उत्तरदाता- पार्चा धारक। यह ध्यान दिया जा सकता है कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य कोई अधिकारी नहीं हैं। "**

48. हमें डर है कि विद्वान एकल न्यायाधीश का पूरा दृष्टिकोण हिंदू कानून के सिद्धांतों की पूरी तरह से गलत सराहना पर था। हिंदू कानून में छवियों या मूर्तियों के विषय पर अलग- अलग विचार हैं। एक स्कूल भगवान को सायम्भु छवियों या पवित्र छवियों

के साथ प्रचारित करता हैः दूसरा पंथ भगवान को सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ बताता है और लोग केवल देवता की शाश्वत आत्मा की पूजा करते हैं और यह केवल मंत्रों के आकर्षण के कारण देवता की अभिव्यक्ति या उपस्थिति है।

49. हिंदू अधिकारियों के अनुसार, छवियाँ दो प्रकार की होती हैं: पहला श्यामभू या स्वयं- अस्तित्व या स्वयं- प्रकट के रूप में जाना जाता है, जबकि दूसरा प्रतिष्ठिता या स्थापित है। पद्म पुराण में कहा गया हैः पत्थर की मिट्टी, लकड़ी, धातु या इसी तरह से तैयार की गई और वेदों, स्मृतियों और तंत्रों में निर्धारित संस्कारों के अनुसार स्थापित हरि (भगवान) की छवि को स्थापित छवियां कहा जाता है. जहां स्वयंभू विष्णु ने मानव जाति के लाभ के लिए खुद को पत्थर या लकड़ी में पृथ्वी पर स्थापित किया है, जिसे स्वयं प्रकट की शैली दी गई है। (बी. के. मुखर्जी- हिंदू लॉ ऑफ रिलीजियस एंड चैरिटेबल ट्रस्टः 5th Edn.)

50. एक सायम्भु या स्वयं प्रकट छवि प्रकृति का एक उत्पाद है और यह अनादी या बिना किसी शुरुआत के है और उपासक बस इसके अस्तित्व की खोज करते हैं और ऐसी छवियों को अभिषेक या प्रतिष्ठान की आवश्यकता नहीं होती है, लेकिन एक मानव निर्मित छवि को अभिषेक की आवश्यकता होती है। इस मानव निर्मित छवि

को दीवार या कैनवास पर चित्रित किया जा सकता है। सालग्राम शिला में नारायण को भगवान के रूप में दर्शाया गया है और यह विष्णु भगवान का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक शिला है- भगवान नारायण और विष्णु के भगवान के रूप में भाग लेने वाला शालग्राम रूप।

51. यह ध्यान देने योग्य है कि आम तौर पर एक मूर्ति को पवित्र किया जाता है। मंदिर, यह एक आवश्यक स्थिति प्रतीत नहीं होती है। इस संदर्भ में अडंगी नागेश्वर राव बनाम के मामले में आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्णय का भी उल्लेख किया जा सकता है। श्री अंकम्मा देवता मंदिर, (1973) 1 ए. डब्ल्यू. आर. 379। उच्च न्यायालय ने रिपोर्ट के पैराग्राफ 6 में कहाः अस्तित्व "। परिभाषित मंदिर का अर्थ है किसी भी पदनाम से एक स्थान। ज्ञात, सार्वजनिक धार्मिक पूजा के स्थान के रूप में उपयोग किया जाता है, और समर्पित, या हिंदू समुदाय के लाभ के लिए या अधिकार के रूप में उपयोग किया जाता है या सार्वजनिक धार्मिक पूजा के स्थान के रूप में उसका कोई भी खंड। वह यह है कि विधानमंडल द्वारा अधिनियम (2) में 'मंदिर' अभिव्यक्ति की परिभाषा 1927), अधिनियम (1951 का 19 वां) और अधिनियम (1966 का 17 वां)। वरदाचारियार, जे., एच. आर. ई. बोर्ड बनाम में पंडरंग रो, जे. के साथ बैठे। नरसिम्हम, (1939)

1 एम. एल. जे. 134, अभिव्यक्ति का अर्थ 'सार्वजनिक धार्मिक स्थान' पूजा की जाती हैः

> " परीक्षण यह नहीं है कि क्या यह किसी विशेष स्कूल के अनुरूप है पूजा में भाग लेने वाले लोगों के वर्ग का दृष्टिकोण। अगर वे इसकी धार्मिक प्रभावकारिता में विश्वास करते हैं, इस अर्थ में कि इस तरह की पूजा से वे स्वयं को किसी अतिमानव के अनुग्रह का लक्ष्य बना रहे हैं। इसे "धार्मिक पूजा" के रूप में माना जाना चाहिए। इसी प्रभाव के लिए विश्वनाथ शास्त्री, जे., द्वारा व्यक्त किया गया विचार था। "

टी. आर. के. रामास्वामी सर्वई और एक अन्य वी. 452 का बोर्ड 1999] 3 एस सी आर हिंदू धार्मिक बंदोबस्ती आयुक्त, मद्रास, आई. एल. आर.

54. एक मूर्ति की उपस्थिति, हालांकि यह हिंदू धर्म की एक अपरिवर्तनीय विशेषता है मंदिर, मंदिर की परिभाषा के तहत एक कानूनी आवश्यकता नहीं है अधिनियम की धारा 9 (12)। यदि जनता या जनता का वह वर्ग जो पूजा के लिए जाएं और विचार करें

कि किसी विशेष स्थान में दिव्य उपस्थिति है, स्थान और वहाँ पूजा करने से वे होने की संभावना है।

55. इस न्यायालय की एक खंड पीठ जिसमें न्यायमूर्ति सत्यनारायणा शामिल हैं। वेंकटरमण मूर्ति में राजू (जैसा कि वे तब थे) और जे. वेंकटेशम वी. श्री राम मंधीराम, (1964) 2 एन डब्ल्यू. आर. 457 ने पाया कि एक मूर्ति और एक ध्वजस्थंभम का अस्तित्व बिल्कुल नहीं है।

56. उस स्थान पर सार्वजनिक धार्मिक पूजा की संतुष्टि होती है, यह जवाब देता है एक मंदिर की परिभाषा। पी. एफ. सदावर्थी बनाम में सर्वोच्च न्यायालय के उनके अधिपत्य।

" यदि दो शर्तें पूरी हो जाती हैं तो एक धार्मिक संस्थान एक मंदिर होगा। एक यह है कि यह सार्वजनिक धार्मिक पूजा का स्थान है और दूसरा है कि यह समर्पित है या लाभ के लिए है, या अधिकार के रूप में उपयोग किया जाता हिंदू समुदाय या उसके किसी वर्ग द्वारा धार्मिक स्थल के रूप में पूजा करें "।

57. एक मंदिर का गठन करने के लिए यह पर्याप्त है यदि यह सार्वजनिक धार्मिक स्थान है। पूजा करें और अगर लोग इसकी धार्मिक प्रभावकारिता में विश्वास करते हैं इस तथ्य का कि क्या कोई मूर्ति या संरचना या अन्य सामान है। सुपर मानव शक्ति

जिसकी उन्हें पूजा करनी चाहिए और उसका आह्वान करना चाहिए आशीर्वाद "।

58. डिवीजन बेंच की टिप्पणियाँ हमारे विचार में सही रही है शास्त्र और हम उसी के लिए अपनी सहमति देते हैं। अगर लोग मंदिरों की धार्मिक प्रभावशीलता में विश्वास करने के संबंध में कोई अन्य आवश्यकता मौजूद नहीं है। ऐसा लगता है कि अन्य क्षेत्रों और विद्वान न्यायाधीश ने इसे पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया है हिंदू शास्त्रों का पहलू- किसी भी स्थिति में, हिंदुओं के शास्त्रों में "अग्नि" है। देवता; "वायु" देवता- ये देवता आकारहीन और रूपहीन हैं लेकिन हर किसी के लिए,अनुष्ठानिक हिंदू देवता के सामने अपनी भेंट चढ़ाते हैं।

59. देवता के लिए आहुति आर. जे. डी. ई. आई. टी. ई. एस. वी. है। अंतिम विद्वान एकल न्यायाधीश हालांकि किसी को नहीं रखने के लिए प्रसन्न थे उस पर निर्भरता। यह कोई विशेष छवि नहीं है जो एक न्यायिक व्यक्ति है, बल्कि यह मन का एक विशेष झुकाव है जो छवि को पवित्र करता है।

60. मूर्ति पूजा में अंतर्निहित एक प्रमुख सिद्धांत को धारण किया जाना चाहिए दिमागः ताकि भक्त पूजा के उद्देश्यों के लिए जो भी भगवान चुन सके और जो भी छवि वह स्थापित कर सकता है

और उस उद्देश्य के साथ पवित्र कर सकता है, विभिन्न देवताओं के बीच श्रेष्ठता या हीनता। शिव, विष्णु, गणपति या सूर्य की प्रशंसा की जाती है, प्रत्येक अपनी बारी में निर्माता, संरक्षक के रूप में और ब्रह्मांड के सर्वोच्च स्वामी। छवि बस एक नाम देती है और रूपहीन भगवान और रूढ़िवादी हिंदू विचार यह है कि अवधारणा। (बी. के. मुखर्जी- धार्मिक और धर्मार्थ न्यासों के हिंदू कानून पर- 5th Edn.)

भूपतिनाथ बनाम के मामले में कलकत्ता उच्च न्यायालय। रामलाल मैत्र, आई. एल. आर. 37 कलकत्ता 128, जिसमें चटर्जी, जे. (पृष्ठ 167 पर) ने कहाः " हिंदू "मूर्ति" या भौतिक शरीर की पूजा नहीं करता है। प्रार्थनाएँ दिखाई देंगी।

61. वे देवता की शाश्वत आत्मा की पूजा करते हैं या उसी की कुछ विशेषताएँ, एक सूचक रूप में, जिसका उपयोग किया जाता है केवल एक प्रतीक या प्रतीक के रूप में चिंतन की सुविधा, एक विशेष देवता के लिए विशिष्ट मंत्रों का जप जो कारण बनता है। देवता की अभिव्यक्ति या उपस्थिति या कुछ के अनुसार, देवता की संतुष्टि "।

62. ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ हैं और उनकी उपस्थिति को उनके द्वारा महसूस नहीं किया जाता है। एक विशेष रूप या छवि का कारण लेकिन सर्वशक्तिमान की उपस्थिति के कारणः यह निराकार है, यह आकारहीन है और यह उपासकों के लाभ के लिए है

कि परम सत्ता की छवियों में अभिव्यक्ति होती है। परम सत्ता का कोई गुण नहीं है, जिसमें शुद्ध आत्मा होती है और जो बिना किसी दूसरे अस्तित्व के है, अर्थात ईश्वर ही वास्तविकता में मौजूद है, उनके अलावा वास्तविक अस्तित्व में कोई अन्य अस्तित्व नहीं है- (इस संदर्भ में देखें गोलाप चंद्र सरकार, शास्त्री का हिंदू कानूनः 8th Edn.)

63. यह प्रभुओं के प्रभु की मानवीय अवधारणा है- यह प्रभुओं के प्रभु की मानवीय दृष्टि हैः देवता को कैसे देखा जाता हैः कैसे कोई देवता को महसूस करता है और देवता को पहचानता है और फिर अभिषेक समारोह के प्रदर्शन पर मंदिर में इसे स्थापित करता है। शास्त्रों में यह प्रावधान है कि कैसे अभिषेक किया जाए और किसी देवता को संपत्ति के उचित और प्रभावी समर्पण के लिए और एक न्यायिक व्यक्ति के रूप में नामित होने के लिए संकल्प और उत्सव के सामान्य समारोहों का पालन करना होगा।

64. डेबटर की अवधारणा में, दो आवश्यक विचारों को निष्पादित करने की आवश्यकता हैः सबसे पहले, देवता को समर्पित संपत्ति एक आदर्श अर्थ में स्वयं देवता में एक न्यायिक व्यक्ति के रूप में निहित होती है और दूसरे स्थान पर, मूर्ति के व्यक्तित्व को शेबेट के प्राकृतिक व्यक्तित्व से जोड़ा जाता है, प्रबंधक या धरम

कर्ता होने के नाते और जिसे मूर्ति की अभिरक्षा सौंपी जाती है और जो मूर्ति की संपत्ति के संरक्षण के लिए अन्यथा जिम्मेदार होता है।

65. देव प्रतिष्ठान तत्व रघुनाथन और मत्स्य और देवी पुराणों के वर्णन में भले ही एकरूपता न हो कि प्रतिमा का प्रतिष्ठापन या प्रतिष्ठापन कैसे होता है, लेकिन यह प्रथा है कि छवि को पहले स्नान मंडप में ले जाया जाता है और उसके बाद संस्थापक संकल्प मंत्र का उच्चारण करता है और इसके पूरा होने पर, छवि को पवित्र जल, घी, दही, शहद और गुलाब जल से स्नान कराया जाता है और उसके बाद पवित्र अग्नि की आहुति दी जाती है जिसके द्वारा प्राण प्रतिष्ठा होती है और शाश्वत आत्मा को उस विशेष मूर्ति में डाल दिया जाता है और फिर छवि को मंदिर में ही ले जाया जाता है और उसके बाद औपचारिक रूप से देवता को समर्पित किया जाता है।

66. लकड़ी या पत्थर का एक साधारण टुकड़ा छवि या मूर्ति बन सकता है और देवत्व का श्रेय उसी को दिया जाता है। जैसा कि ऊपर देखा गया है, यह रूपहीन है, आकारहीन लेकिन यह एक विशेष दिव्य अस्तित्व की मानवीय अवधारणा है जो इसे आकार, आकार और रंग देती है। हालांकि यह सच है कि विद्वान एकल न्यायाधीश ने कुछ प्रतिष्ठित लेखकों को उद्धृत किया है, लेकिन हमारे विचार में ऐसा ही है। तथापि, मुद्दे में मामले और के सिद्धांतों के लिए कोई

सहायता प्रदान न करें ऐसा लगता है कि विद्वान एकल न्यायाधीश ने हिंदू कानून को पूरी तरह से गलत तरीके से पढ़ा है।

67. तथ्यात्मक आधार पर मंदिर हैं- एक में 'जानकीजी' है और दूसरा है 'राजा रानी' लेकिन कल्पना के किसी भी विस्तार से, देवता को नकली रूप में और नकली रूप की शुरुआत की इस अवधारणा को कहा जा सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह हिंदू विधि ग्रंथों के प्रावधानों का गलत अध्ययन है। क्या है?

68. मानव अभिषेक की आवश्यकता होती है और अनुष्ठानों के पूरा होने की स्थिति में प्रतिष्ठापन, दिव्यता का अनुमान लगाया जाता हैः कोई नकली देवता नहीं हो सकताः ऐसा लगता है कि हिंदू कानून की पूरी अवधारणा को उच्च न्यायालय ने गलत तरीके से रखा है। ऐसी ही स्थिति में पटना उच्च न्यायालय ने श्री के मामले में लक्ष्मी नारायण और अन्य। वी. बिहार राज्य और अन्य। (1978) बी. बी. सी. जे. 489 ने कहाः

" 5. इस न्यायालय में श्री बलभद्र पी. डी. सिंह, आर. जे. डी. ई. आई. टी. आई. ई. एस. बनाम का प्रतिनिधित्व करने वाले विद्वान वकील। आवेदन के समर्थन में, दृढ़ता से तर्क दिया कि राजस्व अधिकारियों ने केवल एक को अनुमति देने में खुद को पूरी तरह से गलत तरीके से निर्देशित किया

है याचिकाकर्ताओं को एक गलत धारणा के तहत इकाई कि वे केवल एक मंदिर में स्थापित किया गया और वहाँ केवल एक दस्तावेज है उनके पक्ष में दान, वे एक से अधिक इकाई नहीं प्राप्त कर सके।"

69. विद्वान वकील ने तर्क दिया कि वास्तव में, सभी चार देवताओं अपने अधिकारों में अलग- अलग इकाइयों के हकदार थे, इसके बावजूद तथ्य यह है कि उन्हें अलग से कोई निर्दिष्ट संपत्ति नहीं दी गई थी और यह कि दान संयुक्त रूप से उनके पक्ष में किया गया था। इस मामले के तथ्यों और प्रासंगिक स्थिति पर विचार करने पर कानून की दृष्टि से, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि चारों याचिकाकर्ता अलग- अलग न्यायिक संस्थाएं हैं, संपत्तियां उन्हें न्यायसंगत रूप से प्रदान की जा रही हैं।

70. किसी भी अन्य इंसान की तरह के लिए उपस्थित विद्वान वकील उत्तरदाताओं ने सही माना कि अगर यह चार व्यक्तियों को उपहार होता, वे अलग- अलग चार इकाइयों के हकदार थे क्योंकि उनमें से प्रत्येक एक 'भूमि' थी अधिनियम की धारा 2 के खंड (छ) के अर्थ के भीतर 'धारक' और एक अलग इकाई का अधिकार। अगर ऐसा है तो मुझे इसका कोई कारण नजर नहीं आता। यह विचार रखते हुए कि लाभार्थियों के रूप में स्थिति अलग

होनी चाहिए इस मामले में मूर्तियाँ हैं। यह स्वीकार नहीं किया जा सकता था कि चारों याचिकाकर्ता धारा के अर्थ में एक 'परिवार' का गठन करेंगे।

(ङ) अधिनियम का। धारा 2 (ई. ई.) में परिवार की परिभाषा इस प्रकार है- 'परिवार' का अर्थ है और इसमें एक व्यक्ति, उसका पति या पत्नी और छोटे बच्चे। यहां तक कि अधिनियम में निर्धारित उपरोक्त कठोर परीक्षण को लागू करते हुए, पहले दो याचिकाकर्ताओं, अर्थात् श्री लक्ष्मी नारायण और श्री महाबीरजी को होना चाहिए अलग- अलग इकाइयों के रूप में माना जाता है। और यह मानते हुए भी कि चौथा याचिकाकर्ता, अर्थात्, श्री पार्वतीजी को तीसरे याचिकाकर्ता का जीवनसाथी माना जाता है अर्थात्, श्री शिवाजी, तब भी ये दोनों याचिकाकर्ता हकदार थे एक इकाई तक। मामले के उस दृष्टिकोण में, याचिकाकर्ताओं को अधिकार था कम से कम तीन इकाइयाँ, जो हिंदू सह- खरीददारों की एक ही स्थिति में हों और, इसलिए, कानून की नजर में 'भूमि धारक' या 'परिवारों' को अलग करें।

71. हालाँकि, याचिकाकर्ताओं ने इससे पहले केवल दो इकाइयों का दावा किया था राजस्व प्राधिकरण। इसलिए उन्हें कोई अनुदान देना संभव नहीं है। दो से अधिक इकाइयों की बड़ी राहत। उनका उद्देश्य भी पूरा होगा। यदि उन्हें अधिशेष भूमि के रूप में केवल दो इकाइयों की अनुमति दी जाती है यह मामला केवल 20 एकड़ से

थोड़ा अधिक है। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि भले ही दो [1999] 3 एस. सी. आर. हैं।

72. दुर्भाग्य से वे पूरी तरह से गलत हैं और अर्थ की गलत सराहना की गई है। उद्धरण उचित नहीं हैं और उपयुक्त नहीं हैं, इस तरह हम खुद से बचते हैं उस पर फैलाने से। उपरोक्त दृष्टिकोण से, दो मूर्तियों के तथ्य से इनकार नहीं किया जा सकता है और जैसे कि दूसरी मूर्ति को दूसरी इकाई से वंचित करने का सवाल नहीं उठता है और न ही उठ सकता है। जहां तक कानून के प्रावधानों का संबंध है, यह ध्यान दिया जाए कि इसमें कोई विवाद नहीं है कि यदि दो मूर्तियां न्यायिक व्यक्तित्व के रूप में वर्णित होने में सक्षम हैं, तो दो इकाइयों को एक के बजाय प्रदान किया जाना चाहिए जैसा कि विद्वान एकल न्यायाधीश द्वारा किया गया है।

73. इस प्रकार हम यह अभिलिखित करना समीचीन समझते हैं कि याचिकाकर्ता नंबर 1 और 2 (या ठाकुर राजा, जैसा भी मामला हो) व्यक्तिगत अनुदान के हकदार हैं और इस प्रकार सरकार के अभिलेखों में दो इकाइयों को दर्ज करने का अधिकार है और केवल 75 एकड़ ताल भूमि की छूट याचिकाकर्ताओं को उपलब्ध कराई जाएगी और शेष 5 एकड़ भूमि सरकार को उपलब्ध कराई जाएगी और राज्य सरकार कानून के अनुसार उपरोक्त पाँच एकड़ भूमि से

निपटने के लिए स्वतंत्र होगी क्योंकि हमारे सामने कोई अन्य मुद्दा नहीं उठाया गया था। अपील की अनुमति है।

उच्च न्यायालय के आदेश को दरकिनार कर दिया जाता है और रद्द कर दिया जाता है। इस स्तर पर ऐसा कोई आदेश नही है।

यह अनुवाद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल 'सुवास' की सहायता से अनुवादक न्यायिक अधिकारी आशा चौहान (आर.जे.एस.) द्वारा किया गया है।

अस्वीकरण: यह निर्णय पक्षकार को उसकी भाषा में समझाने के सीमित उपयोग के लिए स्थानीय भाषा में अनुवादित किया गया है और किसी अन्य उद्देश्य के लिए इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है। सभी व्यावहारिक और आधिकारिक उद्देश्यों के लिए, निर्णय का अंग्रेजी संस्करण ही प्रामाणिक होगा और निष्पादन और कार्यान्वयन के उद्देश्य से भी अंग्रेजी संस्करण ही मान्य होगा।